Vol. 05, Issue 02, April - June, 2023
ISSN (Online) No. 2582 – 046X Impact Factor SJIF 2021 : 4.022, Research bib 2022 : 6.010
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

भारत का स्वातंत्र्य-संग्राम में सरोजिनी नायडू की भूमिका

SHALU MAHESHKUMAR PARASHAR, M.A., B.Ed., M.Phil, NET-JRF, Ph.D.
Research Scholar - GUJARAT UNIVERSITY, AHMEDABAD

ABSTRACT :

समाज के उत्थान और स्वतंत्रता के मार्ग में सरोजिनी नायडू का महत्वपूर्ण योगदान हमें सिखाता है कि एक व्यक्ति की साहित्यिकता कैसे उसके देश और समाज के प्रति समर्पण का प्रतीक बन सकती है। उनके योगदान ने हमें यह सिखाया कि कल्पना और विचारधारा की शक्ति से हम समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

सरोजिनी नायडू का योगदान एक महान भारतीय महिला के रूप में हमारे सामाजिक और साहित्यिक धरोहर में सदैव बना रहेगा। उनकी कविताएँ और उनकी विचारधारा हमें अपने मूल्यों की प्रतिष्ठा करने की महत्वपूर्णता याद दिलाती हैं और हमें एक सशक्त और स्वतंत्र भविष्य की दिशा में प्रेरित करती हैं।

Key words: *सरोजिनी नायडू, भारत का स्वातंत्र्य-संग्राम, सरोजिनी नायडू की भूमिका*

प्रस्तावना

13 फरवरी का दिन भारत में 'महिला-दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा है|'भारतीय विश्वविद्यालय महिला संघ' और 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' की कार्यकर्ताओ के सम्मुख जब यह प्रस्ताव आया की जैसे भारत में बाल-दिवस अंतराष्ट्रीय बाल-दिवस की तिथि पर ही न रखकर देश के लोकप्रिय नेता और बच्चों के प्यारे चाचा श्री नेहरू के जन्मदिवस के साथ मनाया जाता है, इसी प्रकार महिला-दिवस भी अंतराष्ट्रीय तिथि 8 मार्च से अलग करके किसी सर्वप्रिय नेत्री के जीवन से मिलाया जाए। श्रीमति लक्ष्मी मेनन दोनों संस्थाओं की प्रमुख सक्रिय सदस्या थीं। उन्होंने प्रस्ताव रखा: बीसवीं शताब्दी की महिलाओं में श्रीमति सरोजनी नायडू से बढ़कर लोकप्रिय और प्रेरक व्यक्तित्व दूसरा कोनसा होगा। बात सभी को जंच गई। प्रस्ताव पारित हुए और दोनों प्रमुख महिला संस्थाओं ने श्रीमती नायडू की जन्म-तिथि 13 फरवरी को 'महिला –दिवस' के रूप में स्वीकार कर लिया।

स्थान-स्थान पर महिला सभाओं में यद्यपि अब 13 फरवरी को महिला-दिवस का आयोजन किया जाता है परंतु राष्ट्रीय स्तर यह भावना अभी व्यापक रूप नहीं ले पाई है। इसका कारण यह है की भारतीय नेत्रियों द्वारा महिला दिवस का यह निर्णय घोषित किए अभी कुछ ही वर्ष हुए हैं। समय बीतने के साथ बाल-दिवस की तरहमहिला-दिवस की भावना भी व्यापक होती जाएगी और तब 'भारत की कोकिला' की याद समारोह का कोकिला-स्वर बनकर पूरे भारत देश में गूंजने लगेगी, गूँजती रहेगी। याद तो अमिट है, केवल उसमे गुंजार का स्वर भरना ही शेष हैं।

Vol. 05, Issue 02, April - June, 2023
ISSN (Online) No. 2582 – 046X Impact Factor SJIF 2021 : 4.022, Research bib 2022 : 6.010
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

सरोजिनी नायडू जीवनी: प्रारंभिक जीवन, परिवार, शिक्षा, विवाह

उनका जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद, भारत में हुआ था। वह एक बंगाली ब्राह्मण अघोरनाथ चट्टोपाध्याय की सबसे बड़ी बेटी थीं, जो निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद की प्रिंसिपल थीं। उनकी माँ वरदासुंदरी देवी थीं।बारह साल की उम्र में, उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय में प्रवेश किया और किंग्स कॉलेज, लंदन में अध्ययन किया (1895-98)। बाद में, उन्होंने कैम्ब्रिज के गिर्टन कॉलेज में अध्ययन किया। 1898 में वह हैदराबाद आ गईं और उसी साल गोविंदराजुलु नायडू से शादी कर ली। वह एक चिकित्सक था। पद्मजा, उनकी बेटी भी भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हो गईं।

सरोजिनी नायडू: राजनीतिक करियर

1904 की शुरुआत में, वह एक लोकप्रिय वक्ता बन गईं, भारतीय स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया, और महिलाओं के अधिकारों में मुख्य रूप से महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया। 1906 में, उन्होंने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय सामाजिक सम्मेलन को संबोधित किया।उन्होंने बाढ़ राहत के लिए अपने सामाजिक कार्यों के लिए 1911 में कैसर-ए-हिंद पदक अर्जित किया। बाद में, उसने जलियांवाला बाग हत्याकांड (अप्रैल 1919) के विरोध में इसे वापस कर दिया। 1909 में, वह 1914 में मुथुलक्ष्मी रेड्डी और महात्मा गांधी से मिलीं।1917 में, उन्होंने रेड्डी के साथ महिला भारतीय संघ की स्थापना में मदद की। बाद में, वह लंदन, यूनाइटेड किंगडम में संयुक्त चयन समिति के सामने सार्वभौमिक मताधिकार की वकालत करने के लिए अपने सहयोगी एनी बेसेंट के साथ गईं। उस समय एनी बेसेंट होम रूल लीग और वीमेन्स इंडियन एसोसिएशन की अध्यक्ष थीं। उन्होंने लखनऊ समझौते का भी समर्थन किया। एक वक्ता के रूप में, अपने व्यक्तित्व और अपनी कविता के समावेश के लिए प्रसिद्ध थीं । अपने व्यक्तित्व और अपनी कविता के समावेश के लिए प्रसिध्द थीं ।

उनके महात्मा गांधी, गोपाल कृष्ण गोखले, रवींद्रनाथ टैगोर और सरला देवी चौधुरानी के साथ घनिष्ठ संबंध थे। वह 1917 के बाद ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध के महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हुईं। 1919 में, वह ऑल इंडिया होम रूल लीग के एक भाग के रूप में लंदन चली गईं। अगले वर्ष, उन्होंने भारत में असहयोग आंदोलन में भाग लिया।

उन्होंने 1924 में भारतीयों के लिए पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की। वह सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारतीय छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व करने वाली प्रमुख हस्तियों में से एक थीं। 1925 में, उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 1928-29 में, उन्होंने कांग्रेस आंदोलन पर व्याख्यान देते हुए उत्तरी अमेरिका का दौरा किया।

Vol. 05, Issue 02, April - June, 2023
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2021 : 4.022, Research bib 2022 : 6.010
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

वह 1927 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की संस्थापक सदस्य थीं। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में पूर्वी अफ्रीकी और भारतीय कांग्रेस 1929 के सत्र की अध्यक्षता भी की।

जब वह भारत वापस आईं, तो उनकी ब्रिटिश विरोधी गतिविधि ने उन्हें 1930, 1932 और 1942-43 में कई जेल की सजा दी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पहले गोलमेज सम्मेलन (लंदन) में शामिल नहीं हुई थी।हालाँकि, 1921 में, सरोजिनी नायडू और अन्य नेताओं ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन (लंदन) में भाग लिया, जिसकी अध्यक्षता वाइसराय लॉर्ड इरविन ने की थी। द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने पर, उन्होंने कांग्रेस पार्टी की नीतियों का समर्थन किया। वह संयुक्त प्रांत (अब उत्तर प्रदेश) की राज्यपाल बनीं और अपनी मृत्यु तक इस पद पर रहीं।

सरोजिनी नायडू का साहित्यिक जीवन (लेखन करियर)

उन्होंने एक सक्रिय साहित्यिक जीवन व्यतीत किया और उल्लेखनीय भारतीय बुद्धिजीवियों को आकर्षित किया। 12 साल की उम्र में उन्होंने लिखना शुरू कर दिया था। महेर मुनीर, उनका नाटक जो फ़ारसी में लिखा गया था, ने हैदराबाद साम्राज्य के निज़ाम को प्रभावित किया।उनकी अंग्रेजी कविता ने ब्रिटिश स्वच्छंदतावाद की परंपरा में गीत कविता का रूप ले लिया। वह अपने लेखन में समृद्ध संवेदी छवियों के विशद उपयोग और भारत के चित्रण के लिए भी प्रसिद्ध थीं। उनका पहला काव्य खंड 1905 में द गोल्डन थ्रेशोल्ड नाम से प्रकाशित हुआ था। उन्हें 1914 में रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर की फेलो के रूप में चुना गया था।

1912 में, उनकी दूसरी और सबसे जोरदार राष्ट्रवादी कविताओं की पुस्तक, द बर्ड ऑफ टाइम, प्रकाशित हुई थी।उनकी एकत्रित कविताएँ जो अंग्रेजी में लिखी गई थीं, उन्हें द सेप्ट्रेड फ्लूट (1928) और द फेदर ऑफ द डॉन (1961) शीर्षकों के तहत प्रकाशित किया गया है।

एक कवि के रूप में सरोजिनी नायडू के काम ने उन्हें उनकी कविता के रंग, कल्पना और गीतात्मक गुणवत्ता के कारण महात्मा गांधी द्वारा 'भारत कोकिला' या भारत कोकिला का नाम दिया। उनकी कविता में बच्चों की कविताएँ और देशभक्ति, रोमांस और त्रासदी सहित कई अन्य विषय शामिल हैं।

सरोजिनी नायडू जीवनी: विरासत

उन्हें "भारत की नारीवादी प्रकाशकों में से एक" के रूप में जाना जाता था। 13 फरवरी को सरोजिनी नायडू की जयंती मनाने के लिए राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

Vol. 05, Issue 02, April - June, 2023
ISSN (Online) No. 2582 – 046X Impact Factor SJIF 2021 : 4.022, Research bib 2022 : 6.010
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

लोकप्रिय रूप से उन्हें "भारत की कोकिला" के रूप में जाना जाता था। इसके अलावा, एडमंड गोसे ने उन्हें 1919 में "भारत में सबसे कुशल जीवित कवि" कहा।उन्हें गोल्डन थ्रेसहोल्ड में भी याद किया गया था, जो कि हैदराबाद विश्वविद्यालय का एक ऑफ-कैंपस एनेक्स था, जिसका नाम उनके पहले कविता संग्रह के लिए रखा गया था। अब, गोल्डन थ्रेसहोल्ड में हैदराबाद विश्वविद्यालय में सरोजिनी नायडू स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड कम्यूनिकेशन हे ।

1990 में, पालोमर वेधशाला में एलेनोर हेलिन द्वारा क्षुद्रग्रह 5647सरोजिनीनाडु की खोज की गई थी। यह उनकी याद में नामित किया गया था। 27 अगस्त 2019 को, माइनर प्लैनेट सेंटर द्वाराआधिकारिक नामकरण प्रशस्ति पत्र प्रकाशित किया गया था। साथ ही, Google India ने 2014 में Google Doodle के साथ सरोजिनी नायडू की 135वीं जयंती मनाई।

सरोजिनी नायडू जीवनी:

1966 में, सरोजिनी नायडू की पहली जीवनी सरोजिनी नायडू नाम की: एक जीवनी पद्मिनी सेनगुप्ता द्वारा प्रकाशित और लिखी गई थी।

2014 में, बच्चों के लिए एक जीवनी, सरोजिनी नायडू: द नाइटिंगेल एंड द फ्रीडम फाइटर, हैचेट द्वारा प्रकाशित की गई थी।नायडू के जीवन के बारे में बीस मिनट की एक वृत्तचित्र, "सरोजिनी नायडू - द नाइटिंगेल ऑफ इंडिया का निर्माण भारत सरकार फिल्म प्रभाग द्वारा 1975 में किया गया था। इसे भगवान दास गार्गा ने निर्देशित किया था।

संदर्भ–सूची

1. "Sarojini Naidu Biography & Facts". Encyclopedia Britannica. Retrieved 27 August 2020.
2. Raman, Sita Anantha (2006). "Naidu, Sarojini". In Wolpert, Stanley (ed.). Encyclopedia of India. Vol. 3. Charles Scribner's Sons. pp. 212–213.
3. Ahmed, Lilyma. "Naidu, Sarojini". Banglapedia: National Encyclopedia of Bangladesh. Retrieved 5 August 2015.
4. "Nizam's kin pulls out 'firmans' showing last ruler's generosity". The Times of India.
5. Reddy, Sheshalatha (2010). "The Cosmopolitan Nationalism of Sarojini Naidu, Nightingale of India". Victorian Literature and Culture.

Vol. 05, Issue 02, April - June, 2023
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2021 : 4.022, Research bib 2022 : 6.010
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

6. Gupta, Indra (2004). India's 50 most illustrious women (2nd ed.). New Delhi: Icon Publications.
7. Baig, Tara Ali (1985). Sarojini Naidu: portrait of a patriot. New Delhi: Congress Centenary (1985) Celebrations Committee, AICC (I).
8. Ramachandran Nair, K. R. (1987). Three Indo-Anglian poets: Henry Derozio, Toru Dutt, and Sarojini Naidu. New Delhi: Sterling Publishers.
9. Padmini Sengupta (1997). Sarojini Naidu. ISBN 9788178624495.
10. चंद्रदेव प्रसाद 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन' एटलांटिक पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-110002.
11. आशारानी व्होरा 'भारत की अग्रणी महिलाएं' शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.